ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 167-169
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

समकालीन भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में धर्म की समीक्षा

ऋतु दीक्षित
एसोसिएट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, दयानन्द आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 15.05.2019 E-mail: -rdritudixit@gmail.com

सारांश : *धर्म मानव जीवन भी सबसे बड़ी आध्यात्मिक शक्ति है, जो जीवन के अस्तित्व को कर रखता है। कोई भी समाज धर्म के बिना जिन्दा नहीं रह सकता, जिसके द्वारा मनुश्य नैतिकता को अपनाता है और वह समाज को एक धार्मिक समुदाय के रूप में मानता है। धर्म के अन्तर्गत विश्वास, कर्मकाण्ड, आर्थिक तथा दार्शनिक तत्व पाये जाते हैं। एक तरफ धर्म व्यक्ति को मोक्ष प्रदान करता है वहीं दूसरी तरफ धर्म व्यक्ति को भावनात्मक, दार्शनिक तथा वैचारिक आवश्यकताओं की करते हुए व्यक्ति तथा समाज को स्थिरता प्रदान करता है। भारत में धर्म आर्थिक तथा राजनैतिक संरचना को निर्धारित करता है।*

कुंजीभूत शब्द– :–धर्म, आध्यात्म, समाज, नैतिकता, दार्शनिकता, विश्वास, कर्मकाण्ड, मोक्ष, वैचारिक, आर्थिक।

धर्म मानव जीवन की सबसे बड़ी आध्यात्मिक षक्ति है जो उसके जीवन के अस्त्तित्व को बनाकर रखता है। कोई भी समाज धर्म के बिना जिंदा नहीं रह सकता, जिसके द्वारा मनुष्य नैतिकता को अपनाता है और वह समाज को एक धार्मिक समुदाय के रूप में मानता है। धर्म के अंतर्गत विश्वास, कर्मकांड, तथा दार्शनिक तत्व पाए जाते है। धर्म के दो लक्ष्य हैं– 1. धर्म के द्वारा व्यक्ति मुक्ति प्राप्त करता है और 2. धर्म व्यक्ति को भावनात्मक, दार्शनिक तथा वैचारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए व्यक्ति तथा समाज को स्थिरता प्रदान करता है। दुनिया के सारे धर्म (प्रोटेस्टेंट धर्म छोड़कर) स्तरीकृत असमानता पर टिके हुए हैं और इसकी संरचना इस तरह बनी हुई है कि वह आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र नहीं करता यानी प्रोटेस्टेंट धर्म में विवेकीकरण पाया जाता है जबकि अन्य धर्म, हिन्दू, इस्लाम, कन्यूशियस तथा कैथोलिक धर्म में विवेकीकरण नहीं पाया गया जिसके कारण पूंजीवाद का विकास नहीं हो पाया। विवेकीकरण के दो अर्थ हैं– 1. खुला ज्ञान का होना और 2. समाज में धार्मिक स्तरीकरण को तोड़ना। वेबर के अलावा दुर्खीम ने धर्म को पवित्र वस्तुओं से परिभाषित करने का प्रयास किया है। दुर्खीम का मानना है कि धर्म के द्वारा सामाजिक एकता पाई जाती है। दुर्खीम ने समाज को एक नैतिक समुदाय माना है और व्यक्ति को नैतिक मानव।

दुर्खीम के अनुसार पवित्र वस्तु का संबंध रीति – रिवाज, परम्परा, कुलदेवता तथा नैतिक मूल्यों से है। दुर्खीम ने धर्म को पवित्र वस्तु से जोड़ा है और पवित्र वस्तु को एक संकेत माना है। पवित्र वस्तु का संबंध सामूहिक चेतना तथा सामूहिक प्रतिनिधित्व से है। यह व्यक्ति के सोचने के तरीके तथा कार्य करने के तरीके को निर्धारित करता है। मार्क्स ने धर्म की आलोचना नहीं की है बल्कि यह कहा है कि 18वीं शताब्दी का सामंतवाद तथा चर्च धर्म की आड़ में गरीबों का शोषण करते थे। अतः जब समाजवादी समाज का निर्माण होगा तो धर्म का संबंध नैतिकता से होगा। Levi Strauss के अनुसार धर्म का संबंध निषेध मिथ्या नातेदारी, वैवाहिक कर्मकांड आदि से है, जिसका उद्भव मानव में वैचारिक स्तर पर एकता लाता है यानी Levi Straussके अनुसार धर्म विचारों की एक संरचना है जो वास्तविक है और यह मानव के अस्तित्व एवं व्यवहार को परिभाषित करता है। अतः धर्म एक विचारधारा है न कि भय। यहां तक हिन्दू धर्म की बात है तो यह जीने का तरीका है। हिन्दू धर्म ज्यादा खुला है और यह बहुलवाद में विश्वास करता है। प्रो. योगेन्द्र सिंह के अनुसार हिन्दू धर्म इतना विस्तृत है कि इसने ईसाई तथा सिक्ख धर्म के अनुकूल अपने आपको परिवर्तित कर दिया है। भारत एक बहुलवादी धार्मिक देश है, जिसकी रक्षा के लिए लोकतांत्रिक समाजवादी तथा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का निर्माण किया गया है। भारत में अधिकतर समाजशास्त्रीयों, मानवशास्त्रीयों ने परम्परागत धार्मिक जीवन एवं आधुनिक राज्य के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है। मूलरूप से भारत में धर्म दो प्रकार्य करता है– 1. सामूहिक चेतना को बढ़ाना और 2. नैतिकता को बढ़ाना।

भारत में हिन्दू समुदाय– हिन्दू धर्म की प्रथम विशेषता यह है कि इसमें सहिष्णुता, मानवता पाई जाती है। हिन्दू धर्म की दूसरी विशेषता यह है कि यह एक ईश्वर में विश्वास नही करता बल्कि यह अनेक कर्मकांडों तथा ईश्वर के अनेक रूपों में विश्वास करता है। जैसे– कोई

व्यक्ति राम की पूजा करता है तो कोई शिव की, कोई ब्रहमा की पूजा करता है। हिन्दू धर्म की तीसरी विशेषता यह है कि इसमें कर्मकांड ज्यादा विकसित होता है। हिन्दू धर्म, कर्म तथा मोक्ष के सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं। धर्म एक नैतिक शक्ति है जो मनुष्य एवं ईश्वर के बीच संबंध स्थापित करती है। कर्म ऐसी क्रिया है, जिस पर पूरे हिन्दू धर्म की सामाजिक संस्थाएं जैसे– जाति, नातेदारी इत्यादि टिकी हुई है। हिन्दू धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है। मोंक्ष का संबंध मुक्ति प्राप्ति करने से होता है। मोक्ष व्यक्ति की प्रतिबद्धता पर आधारित है। चौथी विशेषता यह है कि हिन्दू धर्म में वर्णाश्रम पाया जाता है। हिन्दू धर्म में सन्यास एक महत्वपूर्ण संस्था होती है जो हिन्दू धर्म की व्याख्या तथा पुनर्व्याख्या करती है। हिन्दू धर्म मोक्ष प्राप्ति के लिए अनेक तीर्थ स्थलों का निरीक्षण करते हैं, जैसे – बनारस, हरिद्वार, प्रयाग, पुरी, द्वारिका इत्यादि। इन स्थानों को पवित्र स्थान मानते हैं और यहां की वस्तु को पवित्र मानते हैं। मूल रूप से हिन्दू धर्म तीन तरह के पवित्र स्कूलों में विश्वास करता है – 1. पवित्र पुस्तकें, जैसे– गीता, रामायण, महाभारत आदि, 2. पवित्र स्थान, जैसे– बनारस, गया जी, हरिद्वार, द्वारिका इत्यादि और 3. पवित्र अवसर, जैसे– विवाह, जनेऊ इत्यादि।

भारत में मुस्लिम समुदाय–मुस्लिम धर्म समानता में विश्वास करता है। मुस्लिम धर्म जब छठी शताब्दी में भारत में आया तो उसमें भी स्तरीकरण शुरू हो गया। मध्यकालीन भारत हिन्दू धर्म तथा मुस्लिम धर्म के द्वन्द्वात्मक संबंध को दिखाता है। मुस्लिम धर्म की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:–

1. इस्लाम एक देवता में विश्वास करता है, जिसे हम अल्लाह कहते हैं। मोहम्मद साहब अल्लाह के प्रतिनिधि माने जाते हैं।
2. मुस्लिम धर्म की पवित्र पुस्तक है 'कुरान'।
3. मुस्लिम धर्म अपनी भक्ति को दिखाने के लिए नमाज तथा रोजा करते हैं और ईश्वर की प्राप्ति के लिए हज करते हैं। हज के लिए वे मक्का जातें हैं। प्रत्येक मुस्लिम मुक्ति प्राप्ति के लिए एक बार मक्का जाता है।
4. मुस्लिम धर्म में दो समुदाय पाए जाते हैं – शिया और सुन्नी। इनका परस्पर विरोध इस बात से है कि मोहम्मद साहब की मृत्यु के बाद उनका स्थान कौन लेगा। शिया एवं सुन्नी एक–दूसरे के परस्पर विरोध की भावना दिखाते हैं। भारत में सुन्नी मुसलमानों की संख्या अधिक है।
5. कुरान में लिखी बाते ईश्वर की पुकार समझी जाती है।
6. मुस्लिम धर्म में शरीयत एवं धार्मिक नियम सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। मुस्लिम शरीयत को ईश्वर की इच्छा मानते हैं। मुस्लिम जन्म से लेकर मृत्यु तक शरीयत के द्वारा जीवनयापन करते है। शरीयत एक पवित्र रास्ता है जिसके द्वारा महिलाएं एवं पुरूष शरीयत को ईश्वर के अंतिम सत्ता के रूप मानते हैं।
7. मुस्लिम रमजान में विश्वास करते हैं। मुस्लिम साल के नौवें महीने को पवित्र मानते हैं जिसे रमजान कहते हैं। रमजान आत्मशुद्धीकरण के लिए होता है।

भारत में ईसाई समुदाय– ईसाई धर्म मूल रूप से पश्चिमी समाज की प्रमुख धार्मिक संस्था है। ईसाई धर्म का दो खंडों में विभाजन किया गया है– 1. कैथोलिक धर्म और 2. प्रोटेस्टेंट धर्म। कैथोलिक धर्म कट्टरवादी विचारधारा पर आधारित है, जिसकी जड़ें परम्परागत तथा मध्यकालीन यूरोप में सबसे ज्यादा मजबूत हैं। ईसाई धर्म की धार्मिक पुस्तक बाइबिल है। 18वीं शताब्दी में यूरोप में चर्च धार्मिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संस्थाओं को प्रभावित करता था। ईसाई धर्म मूलरूप से त्याग का धर्म है जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म मोक्ष प्राप्ति के लिए व्यक्तियों को अपने कर्म के प्रति कर्तव्यशील बनाता है। ईसाई धर्म की तीन विशेषताएं – 1. ईसा की विचारधारा में विश्वास करना और ईसाई मसीह को ईश्वर का अवतार मानना, 2. सक्रिय सेवा में विश्वास करना, 3. अपने पड़ोसी को प्यार करना। कैथोलिक धर्म का नेता पोप होता है जो रोमन कैथोलिक धर्म से संबंध रखता है। प्रोटेस्टेंट धर्म का विकास लूथर तथा काल्विन ने किया। प्रोटेस्टेंट धर्म का दर्शन कैथोलिक धर्म के दर्शन से अलग है। प्रोटेस्टेंट धर्म व्यक्ति को क्रियाशील बनाता है और पैसे कमाने के लिए प्रेरित करता है। वेबर ने अपनी पुस्तक Protestant Ethics and Spirit of Capitalism में यह स्पष्ट किया है कि प्रोटेस्टेंट धर्म की शिक्षा के कारण आर्थिक विवेकशीलता आई, जिसके कारण आधुनिक नैतिक पूंजीवाद का विकास हुआ। ईसाई धर्म ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के आने के बाद भारतीय संस्कृति में प्रवेश किया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति में एक नया मोड़ आया। ईसाई धर्म के कारण शिक्षा का अंग्रेजीकरण हुआ।

भारत में जैनधर्म– जैन धर्म का उदय भारत में जातिगत व्यवस्था पर आधारित हिन्दू धर्म के विरोध में हुआ। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर थे। यह धर्म भारतीय स्तरीकृत समाज को चुनौती देता है तथा अहिंसा में विश्वास करता है। यह धर्म दो सम्प्रदायों में बंटा हुआ है – 1. श्वेताम्बर और 2. दिगम्बर।

श्वेताम्बर लोग उजले कपड़े पहनते हैं जबकि दिगम्बर लोग निर्वस्त्र रहते हैं। यह धर्म इस बात में विश्वास करता है कि प्रत्येक जीवित तथा अन–जीवित

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

वस्तु में जीवन होता है जिसे नश्ट नहीं करना चाहिए। जैन धर्म तीन बातों में विश्वास करता है– 1. सम्यक् विश्वास, 2. सम्यक् ज्ञान और 3. सम्यक् आचरण। उचित आचरण के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य और भौतिक जीवन के प्रति विरक्ति आते हैं। जैन लोग आत्मा में और पुनर्जीवन में विश्वास करते हैं। जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का उद्देश्य ब्राहम्णवादी जाति प्रथा से लोगों को मुक्ति दिलाना है और मोक्ष दिलाने के लिए लोगों को यह शिक्षा देते हैं कि वे भौतिक संस्कृति से कोई लगाव नहीं रखें। जैन लोग जीवन में कड़े नियमों का पालन करते हैं ताकि उनकी आत्मा शुद्ध हो जाए। जैन लोग अपने पर नियंत्रण रखते हैं और किसी को दुख नहीं देते हैं। भगवान महावीर की यह शिक्षा रही है कि प्राणी अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीएं। संक्षेप मे हम कह सकते हैं कि जैन धर्म निम्नलिखित पांच चीजों पर बल देता है – 1. अहिंसा, 2. सत्य. 3. ईमानदारी, 4. यौन पवित्रता और 5. गैर–भौतिक चीजों के प्रति रूझान। जैन मतावलंबी वर्ग भारत में सबसे ज्यादा अमीर वर्ग है क्योंकि इनका संबंध व्यापार से रहा है।

भारत में बौद्ध धर्म – बौद्ध धर्म ब्राहम्णवादी विचारधारा के विरोध में उभरा। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध हैं। बौद्ध धर्म के अन्तर्गत बौद्ध धम्म तथा संघ की अवधारणा प्रमुख है। बुद्ध एक जागृत पैगम्बर हैं। धम्म एक सिद्धान्त है और संघ एक समुदाय है। धम्म के चार अर्थ हैं– 1. सम्पूर्ण सत्य से परिभाषित किया जाता है, 2. उचित व्यवहार से किया जाता है, 3. इसे एक सिद्धान्त के रूप में माना जाता है और 4. इसे सर्वागीण अनुभव से समझा जाता है। ज्ञान के अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्य आते हैं– (क) व्यक्ति का विचार उच्च होना चाहिए, (ख) व्यक्ति को सच बोलना चाहिए, (ग) व्यक्ति को उचित साधनों के द्वारा जीवनयापन करना चाहिए।

भारत में सिक्खवाद– भारत में सिक्खवाद का विकास गुरूनानक के नेतृत्व में हुआ। सिक्ख धर्म में प्यार, मानवता, भाईचारा, शुद्धता इत्यादि पाए जाते हैं। इसकी धार्मिक पुस्तक का नाम 'गुरूग्रंथ साहिब' है। इस धर्म का स्थल अमृतसर है जहां स्वर्ण मन्दिर (गोल्डन टेम्पल) का निर्माण किया गया है। 1925 ई0 में गुरूद्वारा अधिनियम का निर्माण हुआ। सिक्ख धर्म एक ऐसा धर्म है जो हिन्दू तथा इस्लाम के सम्पर्क से बना है। सिक्ख धर्म मानवता की शिक्षा देता है और यह धर्म काफी सहनशील तथा व्यक्ति के सर्वागीण विकास के लिए साधन है।

भारत में पारसी धर्म– पारसी धर्म उन व्यक्तियों का समुदाय है जो ईरान से दसवीं शताब्दी में भारत आए। पारसी धर्म उन व्यक्तियों का समुदाय है जो ईरान से दसवीं शताब्दी में भारत आए। पारसी धर्म के धार्मिक नेता जरथ्रुस्ट हैं। जरथ्रुस्ट ने ईरान में निवास किया। यह धर्म दर्शन तथा परोपकार में ज्यादा विश्वास करता है।

भारत में यहूदी धर्म– यह धर्म यहूदियों का धर्म है। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में मात्र 5000 यहूदी रहते हैं। यहूदी लोग भारत में ईसाई युग प्रारम्भ होने के पहले आए। ये लोग महाराष्ट्र, केरल तथा कोचीन में रहते हैं। इनके धर्म स्थल को हम सिनेगॉग कहते हैं। यहूदियों का धर्मग्रंथ तौरा (हिब्रू बाइबिल) है।

आत्मावाद– आत्मावाद जनजातीय समुदाय का धर्म है। जो जनजातीय लोग हिन्दू, इस्लाम और ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए उन्हे हम प्रकृति–पुजारी कहते हैं। आत्मावाद और लघु हिन्दूवाद के बीच समानता पाई जाती है। ये लोग आत्मा की पूजा करते हैं और प्रकृति के पुजारी होते हैं। प्रो0 योगेन्द्र सिंह, मिल्टन सिंगर, प्रो0 आशीष नंदी और प्रो0 रजनी कोठारी के अनुसार भारत में आधुनिकता तथा परम्परा के बीच कोई विरोधाभास नहीं पाया जाता है। हमारी परम्परा और सामाजिक व्यवस्था आर्थिक व्यवस्था के आत्मा को निर्धारित करती है। प्रो0 टी.एन.मदन के अनुसार भारत में परम्परा तथा आधुनिकता के बीच विरोधाभास पाया जाता है।

निष्कर्ष:– इस तरह हम देखते हैं कि धर्म नैतिक विकास, आर्थिक विकास तथा सामाजिक जीवन में समन्वयवाद के रास्ते को निर्धारित किया है। धर्म हमें नैतिक शिक्षा देता है और विज्ञान हमें हमारे आर्थिक विकास के रास्ते को तय करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुबे, एम. सी. इण्डियन सोसाइटी नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1994.
2. दूबे,एस.सी.,सोशोलॉजी ऑफ इण्डियन कल्चर रोटलेज एण्ड कीमन,लंदन 1998.
3. बधेल,डॉ.डी.एस.,"उच्चतर समाजशास्त्रिय सिद्धान्त साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2000.
4. आहूजा राम, भारतीय समाज व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2001.
5. राव,सी.एन.शंकर, सोशोलॉजी ऑफ इण्डियन सोसाइटी, एस. चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली 2004.
6. सिंह योगेन्द्र भारतीय परम्परा आधुनीकिकरण रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2006.
7. हुसनैन, नदी में समकालीन भारतीय समाज भारत बुक सेन्टर, लखनऊ 2007.

*****